जय माता दी

जय माता दी

श्री लक्षचंडी महायज्ञ

मंगलवार 07 फरवरी से रविवार 26 फरवरी 2023

स्थान- श्री गुमटी वाले माता जी का मंदिर, गाँव गुमटी, (शाहबाद मारकंडा) जिला कुरुक्षेत्र, हरियाणा

॥ सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके
शरण्येत्र्यंबके गौरी नारायणी नमोस्तुते ॥

श्री श्री ब्रह्मलीन 1008 माता प्रकाश देवी जी
(श्री श्री गुमटी वाले बड़े माता जी)

श्री श्री गुमटी वाले माता जी
(श्री देवा जी)

जागृति जी (जागो जी)
उत्तराधिकारी

मंदिर का इतिहास

श्री गुमटी वाले माता जी का मंदिर, गाँव गुमटी, (शाहबाद मारकंडा) जिला कुरुक्षेत्र, हरियाणा की स्थापना सन् 1950 में श्री श्री 1008 माता प्रकाश देवी जी ने की थी।

श्री माता प्रकाश देवी जी को गुमटी वाली माता जी व बड़े माता जी के नाम से जाना जाता था। इस पंथ की शुरुआत सन् 1925 में शेखपुरा (वर्तमान पाकिस्तान) में श्री माता सुहागवंती देवी जी ने की थी। माता सुहागवंती देवी जी सन् 1947 में विभाजन के समय ब्रह्मलीन हो गईं।

देखते ही देखते समय बीतने लगा और 18 जनवरी सन् 1964 की पावन बेला पर श्री श्री गुमटी वाले माता जी (श्री देवा जी) का जन्म हुआ। बड़े माँ जी की तरह ही माता ऊषा देवी जी (माँ जी) दैवीय शक्तियों से ओतप्रोत थीं। बाल्यावस्था से ही किए गए अनेक चमत्कारों के कारण माताजी की ख्याति होने लगी जिसे देखते हुए सन् 1967 में बड़े माँ जी ने शत् चंडी यज्ञ का आयोजन कर माँ जी को अपनी उत्तराधिकारी घोषित किया। माँ जगदम्बा के साक्षात् दर्शन की उत्कृष्ट अभिलाषा मन में लिये सन् 1973 ई. में अपने घर का परित्याग करके वे बड़े माता जी के सानिध्य में गुमटी मन्दिर आ गये। अब बड़े माता जी उनके गुरु, माता व शिक्षक थे।

सन् 2016 में माँ भगवती की कृपा से श्री श्री जागृति देवी जी का अवतरण हुआ। दैवीय प्रेरणा से माँ जी ने श्री श्री जागृति देवी जी (जागो जी) को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया।

श्री भगवान कृष्ण की तरह जागृति देवी जी बाल क्रीड़ा करते हुए अपनी बाल लीलाओं से भक्तों एवं श्रद्धालुओं को असीम आनन्द से आच्छादित कर रही हैं।

शारदा पीठ का इतिहास

पीठाधीश्वर
श्री जगद्गुरु शंकराचार्य प्रथा विशाखा श्री शारदा पीठ
श्री श्री श्री स्वरूपानन्देन्द्र सरस्वती महास्वामी जी

उत्तराधिकारी
विशाखा श्री शारदा पीठ
श्री स्वात्मानन्देन्द्र सरस्वती स्वामी जी

परिचय

आधुनिक काल में समयानुसार समाज में सनातन धर्म को विस्तार रूप देने का महान कार्य विशाखा श्री शारदा पीठ द्वारा किया गया। अद्वैतवाद (अद्वैत) का कालातीत, हमेशा प्रासंगिक और अग्रणी दर्शन कराते हुए, संपूर्ण विश्व को दिशा निर्देश करने वाले, भारतीय धर्म को गंगा स्त्रोत वाहिनी की तरह प्रवाहित करने वाले जगतगुरु आदि शंकराचार्य की साधना का अनुसरण विशाखा श्री शारदा पीठ के मार्गदर्शक सिद्धांतों में से एक है।

इनका मुख्य लक्ष्य भारतीय तत्वों को चहुँ दिशाओं में प्रसारित करना है आसेतु हिमालय से कन्याकुमारी तक आदि शंकराचार्य की भाँति विशाखा श्री शारदा पीठ के श्री श्री श्री स्वरूपानन्देन्द्र सरस्वती महास्वामी जी ने भी देशाटन किया। साथ ही हिंदू धर्म का वैश्वीकरण करने और हिंदू जीवन विधान - हिंदू शंकरम, सनातन धर्म जागृति, और वेद वाङ्मय में निहित हिंदू जाति की निष्क्रिय भावना को जगाने के लिए सही तरीके से प्रयास करना जारी रखा है।

श्री यंत्र स्थापना

श्री विद्या के यंत्र को "श्री यंत्र" के नाम से जाना जाता है। शाक्त सम्प्रदाय में "श्री यंत्र" उपासना का विशेष प्रावधान है। स्वयं भगवान् शंकर द्वारा श्री यन्त्र विद्या की दीक्षा श्री जगत्गुरु शंकराचार्य जी को दी गई थी।

अथो त्रिपुरसुन्दर्या वक्ष्ये श्री चक्र निर्णयम्।
सर्वसम्मोहनं देवि सर्वसिद्धिप्रवर्तकम्
शून्यं मध्यगमग्नि कोणसहितं दिग्दन्तिकोणाङ्कित
विंशार मनुमिश्रित करिदलश्रीषोडशाराश्चितम्
सद्वत्तत्रयंसयुत च धरणीगेहाक्किंत त्रैपुरं
भक्तयाभीष्टफलप्रदं कलियुगे श्रीचक्रमुद्द्योतते॥

बिन्दुस्त्रिकोणवसुकोणदशार युग्ममन्वश्रनागदलसङ्गातषोडशारेम्
वृत्तत्रयञ्च धरणीसदनाञ्च श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः

इस यंत्र में सर्वसम्मोहन सर्वसिद्धिप्रद, शून्य बिन्दु अग्निकोण सहित अष्टकोण विंशार, द्वादशार, षोडशदल तीन वृत, भूपुरत्रय होते हैं। इस यंत्र का निर्माण चार कंठ, पांच शिव युवती के मेल से नौं रेखाएं बनती हैं। जिसे मूल प्रकृति कहते हैं। इन रेखाओं को एक दूसरे से मिलाने पर 43 कोण बनते हैं।

इस श्रीयंत्र का निर्माण काले रंग के पाषाण से कांचीपुरम्, तमिलनाडु में होगा। इस यंत्र की स्थापना वेदोक्त विधि से दक्षिण भारत के ब्राह्मणों द्वारा मंदिर प्रांगण में होगी। यह यंत्र मेरुरूप श्रीयंत्र होगा।

श्री लक्षचंडी महायज्ञ की अग्नि इस पावन महायज्ञ में दियासलाई का प्रयोग न करते हुए, अरणि मंथन द्वारा प्रगट करने का प्रावधान है। अरणि शमी वृक्ष में उगे पीपल (अस्वथ) की लकड़ी से निर्मित की जाती है। अप में वेदमंत्रो के उच्चारण द्वारा घर्षण उत्पन्न कर अग्निदेवता का आह्वान किया जाता है। इस अग्नि को शुद्ध कपूर, नारियल की छाल व घी से तीव्र ज्वाला का प्रधान कुण्ड में रूप देकर यज्ञशाला में स्थापित किया जाएगा।

कार्यक्रम समयसारिणी

मंगलवार, 07 फरवरी 2023

प्रातः 11 बजे

शोभायात्रा

(लाडवा मार्ग से शिव मंदिर से मेन बाजार से अरूप नगर)

गुरूवार, 09 फरवरी 2023

प्रातः 10 बजे

कलश यात्रा

(श्री गुमठी मंदिर से प्रारंभ)

शुक्रवार, 10 फरवरी 2023

मंडप प्रवेश

सांय 5:00 बजे

हवन

दोपहर 3 बजे से सांय 4:30 बजे

महाआरती

सांय 6 बजे

शनिवार, 11 फरवरी से
शनिवार, 25 फरवरी 2023

हवन (प्रतिदिन)

प्रातः 8 बजे से दोपहर 1:30 बजे

दोपहर 3:30 बजे से सांय 5 बजे

महाआरती

सांय 5 बजे से 6 बजे तक

भजन संध्या

सांय 7 बजे

रविवार, 26 फरवरी 2023

समापन

पूर्णाहुति - 11:30 बजे

संत समागम - दोपहर 1 बजे

सांस्कृतिक कार्यक्रम - सांय 3:30 बजे

लंगर- प्रतिदिन मध्याह्न 12 बजे से दोपहर 2 बजे, सांय 6:30 बजे से रात्रि 8 बजे।

यज्ञशाला प्रारूप

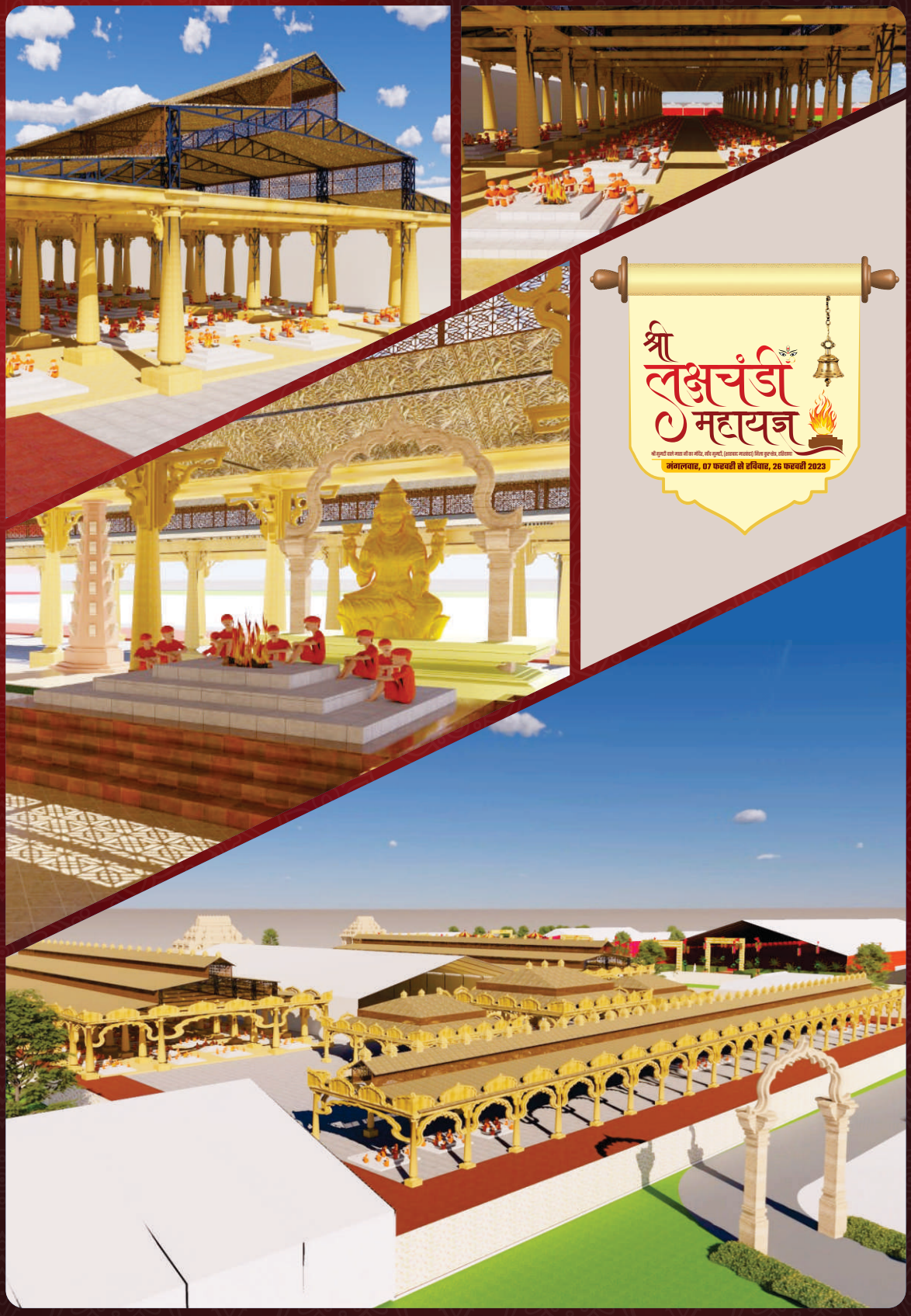

यज्ञ परिचय

श्री श्री लक्ष चंडी महायज्ञ

भारत वर्ष के ब्रह्मरंध्र कहे जाने वाले धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र की पावन धरा पर स्थित, श्री गुमटी मन्दिर, शाहबाद मारकंडा में पधारे 2100 संध्यावन्दन निष्ठ ब्राह्मणों द्वारा, 109 दिव्य कुण्डों में लक्ष चंडी यज्ञ होना है।

इस यज्ञ का आयोजन श्री श्री 1008 गुमटी वाले माता जी के संकल्प अनुसार माघ कृष्ण द्वितीया मंगलवार विक्रम संवत् 2079 से फाल्गुन शुक्ल अष्टमी रविवार विक्रम संवत् 2079, (7 फरवरी से 26 फरवरी सन् 2023 ई) को होगा।

यज्ञ वै विष्णु:- यज्ञ स्वयं विष्णु भगवान हैं। यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म - यज्ञ सर्वश्रेष्ठ कर्म है।
वेदोक्त विधि द्वारा किये गए यज्ञ से न केवल देवता प्रसन्न होते हैं अपितु जनकल्याण के कारण वर्षा होकर अन्न की उपजता से जीवन सम्भव होता है।

श्री श्री 1008 गुमटी वाले माता जी के संकल्प अनुसार एक लाख सप्तशती होम व परायण श्री श्री माँ भगवती को समर्पित होना है। संकल्पानुसार यज्ञ का नाम है-

"श्री षोडषदिन प्रयुक्त, अष्टोत्तरशत कुण्डात्मक अप्रनिहत रुद्र सहित लक्ष चंडी महायज्ञम्"

श्री श्री लक्ष चंडी महायज्ञ क्यों ?

यतोवै श्रेष्ठतम्य कर्म : ।

यजुर्वेद प्रथम अध्याय अनुसार यज्ञ ही श्रेष्ठतम् कर्म है। यज्ञ शब्द निष्पन्न होता है। यज्ञ से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है। इसी भगवदवाच को ध्यान में रखते हुए माँ भगवती की असीम कृपा से श्री गुमटी मंदिर में विगत् 72 वर्षों से अनेक यज्ञों का आयोजन हो रहा है। माँ भगवती की प्रेरणा अनुसार माँ जी (श्री गुमटी वाले माता जी) ने श्री लक्ष चंडी यज्ञ (होमात्मक) का संकल्प लिया। प्राय परायण की संख्या का दशांश होम करने का प्रावधान है परन्तु महामाया की प्रेरणा अनुसार पूर्ण एक लक्ष सप्तशती परायण व होम का संकल्प लिया।

यज्ञ भूमि -" श्री गुमटी मंदिर"

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार 'कुरुक्षेत्र' देवताओं की यज्ञ भूमि है। यूँ तो प्लाक्ष वृक्ष से उत्पन्न सरस्वती यहाँ पूर्ण रुप से प्रगट हैं परन्तु वर्तमान में श्री गुमटी मंदिर 'श्री मारकंडेय नदी' के तट पर स्थित है। जिनके पवित्र तट पर असंख्य ऋषि मनीषियों ने जप, तप, होम कर्म किये हैं।

श्री गुमटी मंदिर व 60 एकड़ के प्रांगण में श्री श्री गुमटी वाले माता जी की प्रेरणा से 108 दिव्य कुंड व 1 महारुद्री कुण्ड में आठ कोटि आहूतियों द्वारा 2100 ब्राह्मण, श्री जगद्गुरु शंकराचार्य प्रथा विशाखा श्री शारदा पीठ, श्री श्री श्री स्वरुपानन्देन्द्र सरस्वती महास्वामी जी की अध्यक्षता में व उत्तराधिपति श्री स्वात्मानन्देन्द्र सरस्वती स्वामी जी के सान्निध्य में एक लक्ष श्री दुर्गा सप्तशती होम का प्रावधान करेंगे।

भारतवर्ष के दक्षिण प्रांत (केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक) से 400 ब्राह्मण व उत्तर भारत (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश, चंडीगढ़) से व पश्चिम् भारत (गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र) से व पूर्व भारत (पश्चिम बंगाल, उड़ीसा बिहार, झारखंड) से 1700 ब्राह्मणों का आगमन होगा। इस महायज्ञ में देश विदेश से संतो, महात्माओं, शोधकर्ताओं व धर्मरक्षकों का आगमन होगा।

महायज्ञ की पावन बेला पर संध्यावन्दन निष्ठ संतों व मनीषियों का सानिध्य

श्री आचार्य महामंडलेश्वर परम पूज्य
स्वामी कैलाशानंद गिरी जी महाराज हरिद्वार

परमपूज्य स्वामी चिदानंद जी
परमाध्यक्ष परमार्थ निकेतन ऋषिकेश

महामंडलेश्वर साध्वी ऋतंभरा जी

श्री श्री 1008 महाराज श्री सुग्रीवानन्द जी
वेदान्ताचार्य रूद्रानन्द धाम ऊना

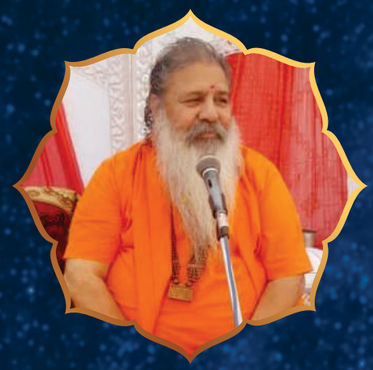

श्री 1008 महाराज राष्ट्रीय
संत बाबा बाल जी ऊना

श्री महामंडलेश्वर जगदीश गिरी जी
महाराज हरिद्वार

श्री महामंडलेश्वर बाल योगिनी संत शिरोमणि
साध्वी श्री करूणा गिरी जी

ब्रह्मर्षि श्री श्री तुलछाराम जी
महाराज गांधी पति ब्रह्मधाम राजस्थान

श्री ज्ञानानंद जी गीता मनीषी हरिद्वार

श्री महंत वंशीपुरी जी पेहवा वाले

श्री मंहत निर्मला देवी जी सीताराम आश्रम

श्री अद्वैत स्वरूप आश्रम कुरुक्षेत्र

श्री भावात्मानन्द जी राढौर वाले

डाः श्री वागीश स्वरूप जी महाराज

राजऋषि वेदमूर्ति आचार्य पवनदत्त मिश्रा जी
(प्रधानाचार्य कालीपीठ हरिद्वार)

सांस्कृतिक कार्यक्रम

रविवार, 12 फरवरी 2023

कुमार विश्वास

ऋचा शर्मा

सोमवार, 20 फरवरी 2023

अरुण गोविल

दीपिका चिखलिया

सुनील लहरी

मनोज मुंतशिर

पवनदीप

अरुणिता

सयाली

आशीष कुलकर्णी

रुपाली जग्गा

मंगलवार, 14 फरवरी 2023

लखबीर सिंह लक्खा

मणि लाडला

गजेन्द्र चौहान

अपारशक्ति खुराना

बुधवार, 22 फरवरी 2023

सोनू निगम

नितिन अरोड़ा

शुक्रवार, 24 फरवरी 2023

कन्हैया मित्तल

अनुराधा पौडवाल

रवि किशन

गुरुवार, 16 फरवरी 2023

साध्वी पूर्णिमा

आशुतोष राणा

शनिवार, 18 फरवरी 2023

हंसराज रघुवंशी

रवि किशन

शनिवार, 25 फरवरी 2023

अर्चना बावरी

रविवार, 26 फरवरी 2023

साधो बैंड एवं विभिन्न भजन मंडली

परिसर प्रारुप

पूजा संभार

सामग्री	मात्रा
हल्दी	894 किलो
रोली	872 किलो
सुपारी	250 किलो
अगरबत्ती	2 लाख पीस
धूप	50 पैकेट
कपूर	450 किलो
केसर	10 डिब्बी
चंदन बुरा	41 किलो
नारियल (खोपा)	2 क्विंटल
लौंग	100 किलो
इलायची	100 किलो

सामग्री	मात्रा
खजूर(सूखा)	11 किलो
अबीर	5 किलो
गुलाल (5 रंग का)	5 किलो
अभ्रक	5 किलो
चावल	200 किलो
बेल फल	16000
महुआ के फूल	348 किलो
जायफल	100 किलो
गुड़	500 किलो
पान के पत्ते	2,50,0000
फल	पंचफल 60 प्रतिकुंड प्रतिदिन
केला	1308 प्रतिदिन

सामग्री	मात्रा
फूल	436 किलो प्रतिदिन
अमरूद	2180 प्रतिदिन
पेठा	218 किलो प्रतिदिन
नींबू	500 प्रतिदिन
अनार	500 प्रतिदिन
बेल	500 प्रतिदिन
खस की जड़	100 किलो
अष्टगंधक	10 किलो
इत्र	100 डिब्बी
बेलपत्र	20 बोरी
तुलसी पत्र	20 बोरी

सामग्री संभार

सामग्री	मात्रा
गाय का देसी घी	1500 टिन
तिल	7000 किलो
जौरी (धान)	95,000 किलो
चावल	558 कुंतल
गुड़	500 किलो
समिधा	10 ट्रक
गुगल	51 किलो
पंचमेवा	100 किलो

पात्र	संख्या (ब्रास)
प्रधान पात्र (20 लीटर वाले)	6
छोटे पात्र (15 लीटर वाले)	26
छोटे पात्र (10 लीटर वाले)	8
छोटे लोटे (2 लीटर वाले)	150
मिट्टी के घड़े	200
अन्य पात्र (2 किलो)	120
पुण्य पात्र (2 किलो)	20
पुण्य पात्र (1 किलो)	400
बांस की टोकरी (2 किलो)	850
बांस की टोकरी (2 किलो)	250
सुर्वा सुरुचि	250
प्रोक्ष पात्र	250

सामग्री	संख्या (ब्रास)
धोती	6500
चादर	6500
अंगोछा	2100
लोटा	2100
पंचपत्र	2100
आसन	2100
यज्ञोपवीत	2100
माला	2100
पुस्तक	2100
तौलिया	2100
नित्यकर्म सामग्री किट	2100

सामग्री	संख्या
(थाली,गिलास,कटोरी,चम्मच) कांस्य 1 लीटर	6
आरती सेट (12)	2
बड़ी घंटी	4
आरती (2 फिट)	4
थाल (24 x 24 इंच)	20
थाल (18 x 18 इंच)	50
पंचगव्य पात्र	6
250 ग्रा. पात्र	24
दीपक बड़े (4 फिट)	2
दीपक बड़े (2 फिट)	4

सामग्री	मात्रा
धोती	108
साड़ी	80
ब्लाउज पीस	400
सिक्के	1116
तौलिए बड़े	50
पत्र (आम,वट आदि)	50
धातु	सोना, चांदी, कांस्य, लोहा, तांबा
नदियों के जल	गंगा, यमुना, गोदावरी, तुंगभद्रा, कृष्णा, नर्मदा

अर्जुन कृत दुर्गा स्तुति

नमस्ते सिद्धसेनानि आर्ये मन्दरवासिनि ।
कुमारि कालि कापालि कपिले कृष्ण-पिंगले ॥ १॥

भद्रकालि नमस्तुभ्यम् महाकालि नमोस्तुते ।
चंडिचंडे नमस्तुभ्यम् तारिणि वरवर्णिनि ॥ २॥

कात्यायनि महाभागे करालि विजये जये ।
शिखिपिच्छ-ध्वज-धरे नाना- भरण-भूषिते ॥ 3॥

अट्टशूल-प्रहरणे खड्गखेटधारिणि ।
गोपेन्द्रस्यानुजे ज्येष्ठे नन्दगोप-कुलोद्भवे ॥ ४॥

महिषासृक्प्रिये नित्यं कौशिकि पीतवासिनि ।
अट्टहासे कोकमुखे नमस्तेऽस्तु रणप्रिये ॥ ५॥

उमे शाकम्बरी श्वेते कृष्णे कैटभनाशिनि ।
हिरण्याक्षि विरूपाक्षि सुधूम्राक्षि नमोऽस्तु ते ॥ ६॥

वेदश्रुति महापुण्ये ब्रह्मण्ये जातवेदसि ।
जम्बूकटककैत्येषु नित्यम् सन्निहितालये ॥ ७॥

त्वं ब्रह्म-विद्या- विद्यानां महानिद्रा च देहिनाम् ।
स्कन्दमातर्भगवति दुर्गे कान्तारवासिनि ॥ ८॥

स्वाहाकारः स्वधा चैव कला काष्ठा सरस्वती ।
सावित्री वेदमाता च तथा वेदान्त उच्यते ॥ ९ ॥

स्तुतासि त्वं महादेवि विशुद्धेनान्तरात्मना ।
जयो भवतु मे नित्यं त्वत्प्रसादाद्रणाजिरे ॥ १०॥

कान्तारभयदुर्गेषु भक्तानां चालयेषु च ।
नित्यं वससि पाताले युद्धे जयसि दानवान् ॥ ११॥

त्वं जम्भनी मोहिनी च माया ह्रीः श्रीस्तथैव च ।
संध्या प्रभावती चैव सावित्री जननी तथा ॥ १२॥

तुष्टिः पुष्टिर्धृतिर्दीप्तिश्चन्द्रादित्य-विवर्धिनी ।
भूतिर्भूतिमतां संख्ये वीक्ष्यसे सिद्धचारणैः ॥ १३॥

महायज्ञ में सहयोग देने हेतु

Scan Me

स्कैन करें

मंदिर के मार्ग हेतु

Google Maps

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें

8728001001, 9466047209, 9991005666

स्थान- श्री गुमठी वाले माता जी का मंदिर, गाँव गुमठी, (शाहबाद मारकंडा) जिला कुरूक्षेत्र, हरियाणा